कि० २

श्रीगणेशाय नमः ॥

१ श्लोक ॥ कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ॥ मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्मौ हितौ सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥ १ ॥ ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा ॥ संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतं ॥ २ ॥ मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान खानि अघ हानि कर ॥ जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइय कस न ॥ जरत सकल सुर बृन्द बिषम गरल जेहि पान किय ॥ तेहि न भजसि मतिमन्द को कृपाल संकर सरिस ॥ आगे चले बहुरि रघुराई ॥ रिष्यमूक पर्बत नियराई ॥ तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा ॥ आवत देखि अतुल बल सींवा ॥ अति सभीत कह सुनु हनुमाना ॥ पुरुष युगल बल रूप निधाना ॥ धरि बटु रूप देखि तैं जाई ॥ कहेसि मोहि निज सैन बुझाई ॥ पठए बालि होहि मन मैला ॥ भागौं तुरत १

किष्कि
न्दा २

तुमककमृगमनुजकीनांई तवमायावशफिरौंभुलाना तांतेनहिंप्रभुपदपहिचें
नाग२॥ ... ...एकमन्दमतिमोहवश कोशलदाअग्यान पुनिप्रभुमोहिबिसरेउ
दीनबन्धुभगवान... ...यदपिनाथबहुअवगुनमोरे सेवकप्रभुहिंपरैजनि
भोरे नाथजीवतवमायामोहा सोनिस्तरैतुम्हारीछोहा तापरमैंरघुबीरदुहाई जानौं
नहिंकछुभजनउपाई सेवकसुतपितुमातुभरोसे रहैअसोचबनैप्रभुपोसे असक
हिचरनपरेउअकुलाई निजतनुप्रगटप्रीतिउरछाई तबरघुपतिउठाइउरलावा
निजलोचनजलसींचजुड़ावा सुनुकपिजियजनिमानसिऊना तेममप्रियलछमण
तेदूना समदरशीमोहिकहसबकोई सेवकप्रियअनन्यगतिहोई ३ ॥सोअ
नन्यजाकेअसिमतिनटरैहनुमन्त मैंसेवकसचराचररूपस्वामिभगवन्त
॥ देखिपवनसुतपतिअनुकूला हृदयहरषबीतीसबसूला नाथशैलपरकपि
पतिरहई सोसुग्रीवदासतवअहई तहिसननाथमइत्रीकीजे दीनजानितेहिअ २

नमोबहुसील बिप्ररूपधरिकपितहंगयेऊ माथनाइपूछतअसभयेऊ कोतुमस्या
मलगौरसरीरा छत्रिरूपफिरहुबनबीरा कठिनभूमिकोमलपदगामी कवन
हेतुबनबिचरहुस्वामी मृदुलमनोहरसुंदरगाता सहितदुसहबनआतपबाता
कीतुमतीनदेवमहंकोऊ नरनारायनकीतुमदोऊ ॥१॥ दो०॥ जगकारनतारनभव
भंजनधरनीभार कीतुमअखिलभुवनपति लीनमनुजअवतार ॥ कोसलेस
तनिकोगेसुबेसुकुमारा बिधिकरलिखाकोमेटनहारा कोसलेसदसरथकेजाये
हमपितुबचनमानिबनआये नामरामलछमनदोउभाई संगनारिसुकुमारिसुहाई
इहांहरिनिसचरबैदेही बिप्रफिरहिंहमखोजततेही आपनचरितकहाहमगाई ॥
कहहुबिप्रनिजकथाबुझाई प्रभुपहिचानिपरेउगहिचरना सोसुखउमाजाइनहिं
बरना पुलकिततनमुखआवनबचना देखतरुचिरबेषकीरचना पुनिधीर
अस्तुतिकीना हरषहृदयनिजनाथहिंचीना मोरन्याउमैंपूछासांई ॥

भयकरीऐ सेभीनाकरवेजकराईहि जहंतहंमरकटकोटिपठाइहि इहिविधिसकल
कथासमुझाई लियेवैठिजापीठचढाई जवसुग्रीवरामकहदेखा अतिसयजन्मध
न्यकरिलेखा सादरमिलेभाइपदमाथा भेटेअनुजसहितरघुनाथा कपिकरिमनव
विचारयहरीती करिहहिंविधिमिलनप्रेमप्रीती॥४॥दोहा॥ तबहनुमन्तउभयदिसि
कहिसबकथासुनाइ पावकसाखीदेइकरि जोरिप्रीतिदृढाइ॥ चौपाई॥ कीन्हिप्रीतिकछु
वीचनराखा लछमनरामचरितसबभाखा कहसुग्रीवनयनभरिवारी मिलिहिनाथ
मिथिलेसकुमारी मन्त्रिनसहितइहांएकवारा वैठिरहेउंकछुकरतविचारा गगनप
थदेखिमैंजाता परवसपरिबहुतविलपाता रामरामहारामपुकारी ममदिसि
देखिदीनपटडारी मांगारामतुरतसोदीन्हा पटउरलाइसोचअतिकीन्हा कहसुग्री
वसुनहुरघुवीरा तजहुसोचमनआनहुधीरा सवप्रकारकरहुंसेवकाई जेहिविधि
मिलहिजानकीआई॥५॥दोहा॥ सखावचनसुनिहरषवोलेकृपालरघुवीर ॥

किस
किन्धा
३

...कारन कवन बसहु बन मोहि कहहु सुग्रीव॥ चौपई॥ नाथ बालि
अरु मैं द्वौ भाई। प्रीति रहि कछु बरनि न जाई। दुंदभी दैत्य महाबलवाना। बधेउ
बालि तेहि कृपानिधाना। मय सुत मायावी तेहि नाऊं। आवा सो हमरे प्रभु गाऊं। अ
र्द्ध राति पुर द्वार पुकारा। बालि रिपु बल सहै न पारा। धावत बालि देखि सो भागा। मैं पुनि
गयेउ बन्धु संग लागा। गिरि वर गुहा पैठि सो जाई। बालि मोहि तब कहा बुझाई। पर
खेसि मोहि एक पखवारा। नहिं आवौं तौ जानेहु मारा। मास दिवस तहं रहेउ खरारी। नि
सरी रुधिर धार तहं भारी। तब मैं निज मन कीन विचारी। [illegible] ६
बालि हतेसि मोहि मारेसि आई। सिला द्वार दै चलेउ पराई। मन्त्रिन पुर देखा बिनु साईं।
दीनउ राज मोहि बरिआई। बालि ताहि मारि गृह आवा। देखि मोहि जिय भेद बढ़ावा।
रिपु सम मोहि मारेसि भारी। हरि लीनेसि सर्बस अरु नारी। ताके भय रघुबीर कृपा
ला सकल भवन मैं फिरेउ बिहाला। इहां श्राप बस आवत नाहीं। तदपि सभीत रहैं २

मनमाही सुनिसेवकदुखदीनदयाला फरकिउठिद्वैभुजाबिसाला॥६॥दोहरा॥सुनुसु
ग्रीवमारिहौं बालिहिंएकहिंबान॥ ब्रह्मरुद्रसरनागतहुं गयेनउबरहिंप्रान॥ चौ
पई॥जेनमित्रदुखहोहिंदुखारी तिनहिंबिलोकितपातकभारी निजदुखगिरिसमरज
कैजाना मित्रकेदुखरजमेरुसमाना जिनकेअसमतिसहजनआई तेसठहठकतक
रतमिताई कुपथनिवारिसुपंथचलावा गुनप्रगटैअवगुनहिंदुरावा देतलेतमनसं
कनधरही बलअनुमानसदाहितकरही बिपतिकालकरिसतगुननेहा श्रुतिकह
संतमित्रगुनएहा आगेकहमृदुबचनबनाई पाछेअनहितमनकुटलाई जाकरचि
तअहिगतिसमभाई असकुमित्रपरहरेभलाई [illegible] मित्रमित्रहोप्रीतिकरि
हृदयध्यानमुस्क्यान॥ ताकेमनबचप्रेमहिय दुरैदुराइनप्रान [illegible]॥ सेवकसठ
नृपकृपनकुनारी कपटीमित्रसूलसमचारी सखासोचत्यागहुबलमोरे सबबिधि
करबकाजमैंतोरे कहसुग्रीवसुनहुरघुबीरा बालिमहाबलअतिरनधीरा दुंदुभि

किस
किंद
अस्थिताल दिखाये बिनुप्रयास रघुनाथ ढहाये देखि अमित बल बाढी प्रीती॥
बालि बधन की भई परतीती बार हिं बार नाइ पद सीसा प्रभुहिं जानि मन हरष कपी
सा उपजा ज्ञान बचन तब बोला नाथ कृपा मन भयेउ अडोला सुख संपति प
रिवार बडाई सब परिहरि करिहों सेवकाई ये सब राम भक्ति के बाधक कहहीं संत
तव पद आराधक सत्रु मित्र दुख सुख जग माहीं माया कृत परमारथ नाहीं बालि परम
हित जासु प्रसादा मिलेउ राम तुम समन बिषादा सपने हु जेहि सन होइ लराई जागे
समुझित मन सकुचाई अब प्रभु कृपा करहु इहि भाँती सब तजि भजन करौं दिन राती
सुनि बिराग संयुत कपि बानी बोले बिहंसि राम धनुपानी जो कछु कहेउ सत्य सब सोई
सखा बचन मम मृषा न होई नट मरकट इव सबहिं नचावत राम खगेस बेद अस
गावत लै सुग्रीव संग रघुनाथा चले चाप सायक गहि हाथा तब रघुपति सुग्री
व पठावा गर्जेसि जाइ निकट बल पावा सुनत बालि क्रोधातुर धावा गहि कर च

रामचारिसमुझावा सुनुपतिजिन्हहिमिलासुग्रीवा तेद्वौबंधुतेजबलसींवा कोशले
शसुतलक्षमणरामा कालहुजीतशकहिंसंग्रामा सोइ रघुवीरहृदयमहेंआनहु काउ
हुमोहकहाममानहु कहाबालिसुनुभीरुप्रिय समदरसीरघुनाथ
जौंकदाचिमोहिमारिहैं तौपुनिहोंउसनाथ असकहिचलामहाअभिमानी ॥
तृणसमानसुग्रीवहिंजानी बालिदेखिसुग्रीवहिंठाढ़ा हृदयक्रोधपुनिवहुविधिबाढ़ा॥
भिरेउभयबालिअतितर्जा मुष्टिकमारिमहाधुनिगरजा तवसुग्रीवविकलहोइ भागा
मुष्टिप्रहारवज्रसमलागा मैंजोकहारघुवीरकृपाला वंधुनहोइमोरयहकाला एकरूप
भ्रातातुमदोऊ तेहिभ्रमतेंनहिंमारेउसोऊ करपरसासुग्रीवशरीरा तनुभईकुशल
गईसवपीरा मेलिकंठसुमनकीमाला पठवापुनिबलदेइविशाला पुनिनानावि
धिभईलराई विटपओटदेखहिंरघुराई बहुछलबलसुग्रीवकरि हृद
यहारिभयमानि मारा बालिहिंरामतव हियेमांझशरतानि पराविकलमहि

कि॰ रा
किं॰ न्दा
५

रके लागे पुनिउठि बैठ देखि प्रभु आगे स्याम गात सिर जटा बनाये अरुण नय
न सर चाप चढाये पुनिपुनि चितै चरण चित दीन्हे सुफल जन्म माना प्रभु चीन्हे
हृदय प्रीति मुख बचन कठोरा बोला चितै राम की ओरा धर्म हेतु अवतरे उ गुसाईं
मारेहु मोहि ब्याध की नाईं मैं बैरि सुग्रीव पयारा कारण कवन नाथ मोहि मारा
अनुजबधु भगनी सुत नारी सुनु सठ ये कन्या सम चारी इन्है कुदृष्टि बिलो
कै जोई ताहि बधे कछु पाप न होई मूढ तोहि अतिशय अभिमाना नारि सिखा
वन करेसि न काना मम भुज बल आश्रित तेहि जानी मारा चहसि अधम
अभिमानी ॥ १०॥ दो॰ सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरी मोर प्रभु
अजहूं मैं पातकी अन्तकाल गति तोर ॥ ॥ सुनत राम अति कोमल बानी
बालि सीस परसेउ निज पानी अचल करौं तनु राखहु प्राना बालि कहा सुनु कृपानिधाना
जन्म जन्म मुनि जतन कराहीं अन्त राम कहि आवत नाहीं जासु ना

मखल संकर काशी देतसवहिंसमगतिअविनाशी ममलोचनगोचरसोइआवा
बहुरिकिप्रसप्रभुबनहिबनावा॥१२॥ छं॥सोनयनगोचरजासुगुननितनेति
कहिश्रुतिगावहीं जितिपवनमनगोनिरसकरिमुनिध्यानकबहुंकपावहीं मोहि
जानिअतिअभिमानवशप्रभुकहेउ राखुशरीरहीं असकवनसठहठकाटिसु
रतरुवारिकरहीकरिबरहीं अबनाथकरिकरुणाविलोकहुदेवयहबरमागऊं जे
हिजोनिजनमौंकर्मवशतहंरामपदअनुरागऊं यहतनयममसमविनयबलकल्या
णप्रदप्रभुलीजीये गहिबांहसुरनरनाहआपनदासअंगदकीजीये॥दो॥रामच
रणदृढप्रीतिकरिबालिकीनतनुत्याग सुमनमालजिमिकंठतेगिरतनजानैनाग॥
चौपाई॥रामबालिनिजधामपठावा नगरलोगसबव्याकुलधावा नानाविधिबिल
पकरतारा छूटेकेशनदेहसंभारा पुनिपुनितासुसीसउरधरई बदनविलोकि
हृदयदुखदहई मैयपिबहुतिनमहिमसुनावा कालविवशप्रियमम्महेमनआवा॥

अंगदकहँकछुकहननपावा बीचहितरपुरब्राह्मणपठावा ताराविकलदेखिरघु
राया दीनज्ञानहरलीनीमाया छितिजलपावकगगनसमीरा पंचरचितयहअ
धमशरीरा प्रगटसोतनुतवआगेसोवा जीवनित्यकहिलगितुमरोवा उपजाज्ञानच
रणतवलागी लीनेसिपरमभक्तिवरमांगी उमादारुजोषितकीनाईं सबहि
नचावतरामगुसाईं तवसुग्रीवहिआयसुदीना मृतककर्मविधिवतसवकीना
रामकहाअनुजहिसमुझाई राजदेहुसुग्रीवहिजाई रघुपतिचरणनाइकरिमा
था चलेसकलप्रेरितरघुनाथा॥१०॥ दोहा॥ लक्ष्मणतुरतवुलायकेपुरजन
विप्रसमाज राजदीनसुग्रीवकहंअंगदकहंयुवराज॥ [illegible]॥ उमारामसमहि
तजगमाहीं गुरुपितुमातुवंधुकोउनाहीं सुरनरमुनिसवकीयहरीती स्वार
थलागिकरैंसवप्रीती वालित्रासव्याकुलदिनराती तनुविवरणचिंताजरछाती
सोसुग्रीवकीनकपिराऊ अतिकोमलरघुवीरसुभाऊ ऐसेप्रभुकहँजेपरि

कि॰ स
किन्दा
६

हरहीं कबहिंनविपतिजालनरपरहीं पुनिसुग्रीवहिलीनबुलाई बहुप्रकारनृपनी
तिसिखाई कहसुग्रीवसुनहुरघुराया दीनजानपुरकीजियदाया कहप्रभुसुनुसु
ग्रीवहरीसा पुरनजाउंदशचारबरीसा गतग्रीषमबरषाऋतुआई रहिहौंनि
कटशैलपरछाई अंगदसहितकरहुतुमराजु संततहृदयधरिममकाजु तबसुग्री
वभवनफिरिआये रामप्रवर्षणगिरिपरछाये ॥१३॥ दोहा॥ प्रथमहिदेवनगिरिगुहा
राखेउरुचिरबनाई रामकृपानिधिकछुकदिन बासकरहिंगेआई॥ चौ. सुन्दरवनकु
सुमितअतिशोभा गुंजतचंचरीकमधुलोभा कंदमूलफलपत्रसुहाये भएबहुतजब
तेप्रभुआये देखिमनोहरशैलअनूपा रहेतहंअनुजसहितसुरभूपा मंगलरूपभयेउबन
तबते कीन्हनिवासरमापतिजबते मधुकरखगमृगतनुधरिदेवा करहिंसिद्धमुनि
प्रभुकीसेवा फटकशिलाअतिशुभ्रसुहाई सुखआसीनतहांद्वौभाई कहतअनुजस
नकथाअनेका भगतिविरतिनृपनीतिविवेका बरषाकालमेघनभछाये गरजतलाग

परम सुहाये॥१४॥ दो॰ ॥ लछमन देखु मोर गन नाचत बारिद पेखि गृही बिरति रत
हरष जस बिस्नुभगत कहँ देखि॥ चौ॰ ॥ घन घमंड नभ गरजत घोरा प्रियाहीन डरपत
मन मोरा दामिनि दमकरहि घन माहीं खल की प्रीति जथा थिर नाहीं बरषहिं जलद भू
मि नियराये जथा नवहि बुध बिद्या पाये बुंद अघात सहैं गिरि कैसे खल के बचन सं
त सहैं जैसे छुद्र नदी भरि चलि उतराई जस थोरे धन खल बौराई भूमि परत भा डाबर
पानी जिमि जीवहिं माया लपटानी सिमिटि सिमिटि जल भरै तलावा जिमि सदगु
न सज्जन पहँ आवा सरिता जल जलनिधि महँ जाई होइ अचल जिमि जिव हरि पाई॥
१५॥ दो॰ ॥ हरित भूमि तृन संकुल समुझि परै नहि पंथ जिमि पाखंड बिबाद ते लु
प्त भये सदग्रंथ॥ चौपई॥ दादुर धुनि चहुँ ओर सुहाये बेद पढ़ै जनु बटु समुदाये नव
पल्लव भे बिटप अनेका साधक मन जस होइ बिबेका अर्क जवास पात बिनु भयउ जि
मि सुराज्य खल उद्यम गयउ खोजत कतहु मिलै नहिं धूरी करै क्रोध जिमि धर्महि दूरी॥

शशिसंपन्नसोहमहिकैसी उपकारीकीसंपतिजैसी निसितमघनखद्योतविराजा जनु
दंभिनकरमिलासमाजा महावृष्टिचलिफूटिकियारी जिमिसुतंत्रहोइविगरहिंनारी
कृषीनिरावहिंचतुरकिसाना जिमिबुधतजहिंमोहमदमाना देखियचक्रवाकखगनां
ही कलिहिंपाइजिमिधर्मपराही ऊषरवरषैत्रिननहिंजामा ज्याहृदय जसउपजनकाम
विविधजंतुसंकुलमहिभ्राजा बढेप्रजाजिमिपाइसुराजा जहंतहंपथिकरहेथकिनाना
जिमिइंद्रियगनउपजेज्ञाना॥१४॥ दो० ॥कबहुंप्रबलबहमारुतजहंतहंमेघविलाहिं॥
जिमिकुपूतकुलउपजे सद्धर्मनसाहिं॥दो०॥कबहुंदिवसमहंनिविडतमकबहुंकि
प्रगटपतंग उपजैविनसैज्ञानजिमि पाइसुसंगकुसंग॥चौ०१६॥वरषाविगतसरदऋ
तुआई देखहुलछिमनपरमसुहाई फूलेकासकलमहिछाई जनुवरषाकृतप्रगटवु
ढाई उदितअगस्तिपंथजलसोषा जिमिलोभहिंसोषैसंतोषा सरितासरजलनिर्मल
सोहा संतहृदयजसगतमदमोहा रसरससूखसरितसरपानी ममतात्यागकरहिं

जिमि ज्ञानी॥ जानि सरद रितु खंजन आये॥ पाइ समय जिमि सुकृत सुहाये॥ पंकु न रे-
नु सोह असि धरनी॥ नीति निपुन नृप कै जसि करनी॥ जल संकोच बिकल भये मीना॥
अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना॥ बिनु घन निर्मल सोह अकासा॥ जिमि हरिजन परिहरि स-
ब आसा॥ कहुं कहुं ब्रिष्टि सारद थोरी॥ कोउ एक पाव भक्ति जिमि मोरी॥१६॥ दोहा॥ चले
हरषि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि॥ जिमि हरि भक्ति पाइ श्रम तजहिं आश्रमी चा-
रि॥१६॥ सुखी मीन जे नीर अगाधा॥ जिमि हरि सरन न एकौ बाधा॥ फूले कमल सोह सर
कैसे॥ निर्गुन ब्रह्म सगुन भये जैसे॥ गुंजत मधुकर मुखर अनूपा॥ सुंदर खग रव नाना रू-
पा॥ चक्रबाक मन दुख निसि पेखी॥ जिमि दुर्जन पर संपति देखी॥ चातक रटत त्रिषा अति
ओही॥ जिमि सुख लहै न संकर द्रोही॥ सरदातप निसि ससि अपहरई॥ संत दरस जिमि पात-
क टरई॥ देखि इंदु चकोर समुदाई॥ चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई॥ मसक दंस बीते
हिम त्रासा॥ जिमि द्विज द्रोह किये कुल नासा॥१७॥ दोहा॥ भूमि जीव संकुल रहे गये सरद रि-

तु पाइ सतगुरु मिलें जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाइ॥ चौपाई॥ बरषा गत निर्मल रितु
आई सुधि न तात सीता कै पाई एक बार कैसेउ सुधि पावौं कालहु जीति निमिष महं
आनौं कतहुं रहै जौं जीवत होई तात जतन करि आनौं सोई सुग्रीवहुं सुधि मोरि बिसारी
पावा राज कोस पुर नारी जेहिं सायक मैं मारा बाली तेहिं सर हतौं मूढ़ कहं काली जासु
कृपा छूटैं मद मोहा ता कहं उमा कि सपनेहु कोहा जानहिं यह चरित्र मुनि ग्यानी जिन रघु
बीर चरन रति मानी लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना॥१८
दो०॥ तब अनुजहि समुझावा रघुपति करुना सींव। भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुग्री
व॥ चौपाई॥ इहां पवनसुत हृदय बिचारा राम काज सुग्रीव बिसारा निकट जाइ चरनन
सिर नावा चारिहु बिधि तेहि कहि समुझावा सुनि सुग्रीव परम भय माना बिषय मोर हर
लीन्हेउ ग्याना अब मारुतसुत दूत समूहा पठवहु जहं तहं बानर जूहा कहेउ पाख महं आव
न जोई मोरे कर ता कर बध होई तब हनुमंत बुलाए दूता सब कर करि सनमान बहूता
भय अरु प्रीति नीति देखराई चले सकल चरनन सिर नाई तेहि अवसर लछिमन पुर

कि० स
किन्धा
९

समुझाये क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाये॥२०॥ दो० ॥ धनुष चढाइ कहा तब जारि करौं पुर छार॥
ब्याकुल नगर देखि तब आवा बालिकुमार॥ चौ० ॥ चरन नाइ सिर बिनती कीन्ही लछमन अ
भय बाँह तेहि दीन्ही क्रोधवंत लछमन सुनि काना कहि कपीस अति भय अकुलाना सुनु हनु
मंत संग लै तारा करि बिनती समुझाउ कुमारा तारा सहित जाइ हनुमाना चरन बंदि प्रभु
सुयश बखाना करि बिनती मंदिर लै आये चरन पखारि पलँग बैठाये तब कपीस चरन
न्हि सिर नावा गहि भुज लछमन कंठ लगावा नाथ विषय सम मद कछु नाहीं मुनि मन मोह
करै छिन माहीं सुनत विनीत वचन सुख पावा लछमन तेहि बहु बिधि समुझावा पवन त
नय सब कथा सुनाई जेहि बिधि गये दूत समुदाई॥२१॥ दो० हरषि चले सुग्रीव तब अं
गदादि कपि साथ रामानुज आगे किये आये जहँ रघुनाथ॥ चौपई॥ नाइ चरन सिर कह
कर जोरी नाथ मोहि कछु नाहिन खोरी अतिशय प्रबल देव तव माया छूटै तब हि करहु ज
व दाया विषय विवश सुर नर मुनि स्वामी मैं पामर पशु कपि अति कामी नारि नयन सर

कुपहि कसागा महाघोर निसि सोवत जागा लोभ पास जेहि गर न बंधाया सो नर तुम समान
रघुराया यह गुन साधन तें नहि होई तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई तब रघुपति बोले मुसकाई तुम
प्रिय मोहि भरत जिमि भाई अब सोइ यतन करहु मन लाई जेहि विधि सीता की सुधि पाई॥२२॥
विधि दोहा॥ इहि होत बतकहि आये बानर यूथ नाना बरन सकल दिसि देखिय कीस बरूथ। चौ
पई। बानर कटक उमा मैं देखा सो मूरख जो करन चह लेखा आइ राम पद नावहिं माथा निरखि ब बहुप
दन सब होहि सनाथा अस कपि एक न सेना माहीं राम कुसल जेहि पूछी नाहीं यह नहि कछु प्रभु
की अधिकाई बिस्वरूप व्यापक रघुराई ठाडे जहं तहं आयसु पाई कहि सुग्रीव सबै समुझाई रामका कहि
ज अरु मोर निहोरा बानर यूथ जाहु चहुं ओरा जनकसुता कहं खोजहु जाई मास दिवस महं
आयेउ भाई अवधि मेटि जो बिनु सुधि पाये आवत मरहि सो मम कर आये॥२३॥ दोहा॥ बचन
सुनत सब बानर जहं तहं चले तुरन्त तब सुग्रीव बुलाय कहि अंगद नल हनुमन्त॥ चौपई॥
सुनहु नील अंगद हनुमाना जामवन्त मति धीर सुजाना सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहू

कि॰स
कि॰का
५९

सीतासुधिपठवहुसबकाहू मनवचक्रमसोजतनविचारेहु रामचंद्रकरकाजसंवारेहु भा
नुपीठसेइयउरआगी स्वामीभजिसुनकलछलत्यागी तजिमायासेइयपरलोका मिटैसक
लभवसंभवशोका देहधरेकरयहफलभाई भजियराममवकामविहाई सोइगुनग्यसोई
वडभागी जोरघुवीरचरनअनुरागी आयसुमागिचरनसिरनाई चलेहरषिसुमिर
तरघुराई पाछेपवनतनयसिरनावा जानिकाजप्रभुनिकटबुलावा परसासीससरोरु
हपानी करमुद्रिकादीनजनजानी वहुप्रकारसीतहिसमझायेहु कहिवलविरहवेगितुमआ
येहु हनुमतजन्मसुफलकरिमाना चलेहृदयधरिकृपानिधाना यद्यपिप्रभुजानतस
वबाता राजनीतिराखतसुरत्राता॥२४॥ दो०॥ चलेसकलबनखोजतसरितासरगिरि
खोह रामकाजलयलीनमन विसरातनकरछोह॥ चौ०॥ कतहुहोइनिसिचरसनभेटा
प्रानलेहिंइकएकचपेटा वहुप्रकारगिरिकाननहेरही कोउमुनिमिलैताहिसवघेरही ला
गितृषाअतिसयअकुलाने मिलैनजलवनगहनभुलाने मनहनुमानकीनअनुमाना

मरनचहतसबबिनुजलपाना चढिगिरिशिखरचहूंदिशिदेखा भूमिबिंवरइककौतुकपेखा
चक्रबाकबकहंसउडाहीं, बहुतेकखगप्रबिशहिंतेहिमाहीं गिरितेउतरपवनसुतआवा
सबकहुंलैसोइबिवरदिखावा आगेकरिहनुमन्तहिंलीन्हा पैठेबिवरबिलम्बनकीन्हा॥२४॥
दो० ॥ दीखजाइउपवनवरसरविगसितबहुकंज मन्दिरएकरुचिरतहंबैठिनारितपपुं [illegible]
ज॥ चौ० ॥ दूरितेताहिसबन्हिसिरनावा पूछेनिजवृत्तान्तसुनावा तबतेइकहाकरहुज
लपाना खाहुसुरससुन्दरफलनाना मज्जनकीनमधुरफलखाये तासुनिकटपुनिसब
चलिआये तेहिंसबआपनिकथासुनाई मैंअबजावजहांरघुराई मून्दहुनयनविवरतजि
जाहु पैहहुसीतहिजिनपछिताहु नयनमून्दपुनिदेखहिंबीरा ठाढेसकलसिन्धुकेतीरा ॥
सोपुनिगईजहांरघुनाथा जाइकमलपदनाएउमाथा नानाभांतिविनयतेइंकीन्ही अनपा
यनीभक्तिप्रभुदीन्ही ॥२५॥ दो० ॥ बदरीवनकहुंसोगई प्रभुआज्ञाधरिशीस उरधरिराम
चरनजुगजेबन्दितअजईस॥ चौ० ॥ इहांबिचारहिंकपिमनमाहीं बीतीअवधकाजकछु

कि० स
कि० का
११

नाहीं तव मिलकर हि परस्पर बाता बिनु सुधि लिये करब का भ्राता कहि अंगद लोचन भर
बारी दुहु प्रकार भई मृत्यु हमारी इहां सुधि न सीता की पाई उहां गये मारहि कपिराई ।
पिता बधे पर मारत मोही राखा राम निहोर न ओही पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं मरन भयो
कछु संसय नाहीं अंगद बचन सुनत कपि बीरा बोलि न सकहिं नयन बह नीरा छिन एक सो-
च मगन है रहे पुनि अस बचन कहत सब भये हम सीता की बिनु सुधि लीने फिर बन तु
सुयुवराज प्रवीने न जाहु सुनक कहु करहु उपाई हृदय राख के सब पुर गई अस कहि सिंधु
तट जाई बैठे कपि सब दर्भ डसाई जामवंत अंगद दुख देखी कहि कथा उपदेस बिसेषी ता
त राम कहुं नर जिन जानहु निर्गुन ब्रह्म अजित अज मानहु हम सब सेवक अति बड़भागी सं-
तत सगुन ब्रह्म अनुरागी ॥२२॥ दोहा॥ निज इच्छा प्रभु अवतरै सुर महि गो द्विज लागि सगु
न उपासक रहिं तब मोच्छ सकल सुख त्याग ॥ चौ० ॥ इहि बिधि कथा कहहि सब भांति गिरि कंद
रा सुनी सम्पाति बाहिर हुई देखे बहु कीसा मुहि अहार दीन जगदीसा आजु सब कहि भक्षण क
रहुं दिन बहु गये अहार बिन मरहूं कबहु न मिल भर उदर अहारा आजु दीन बिधि एकहिं बारा ॥

इरपे सुधवचननसुनिकाना अबभाषरमानन्दहुलजाना कहिनबउठेगरुडकहुंदेषी जानव
नाननसीचविशेषी कहिहिविचारोमेगहनमनमाहीं धन्यमहाप्रभुनरतनकोउमनाहीं रामकाज
कारणतनुत्यागी हरिपुरगयोपरमबडभागी जोरघुवीरचरणचितलावे तेहितमध्
नमध्यानकहावै सुनिखगहरषमोमकहुतजानी आवानिकटदेकपिनमभयमानी ताहिदेषि
नवचलेपराई ठहकीननेहुपुपचढिवाई तिनहिंप्रभयकहियकोसिजाई कथासकलति
नताहिसुनाई सुनिसम्पातिवन्धुकीकरणी रघुपतिमहिमाबहुबिधिबरणी॥२८॥ दोहा
मोहिंलैजावन्दुसिन्धुतट देउंतिलांजुलिताहि बचनसहायकरवमै पैहहुखोजहुजाहि
चौपाई॥अनुजक्रियाकरिसागरतीरा कहनिजकथासुनहुकपिबीरा हमद्वौबन्धुप्रथमत
रुणाई गगनगयेरविनिकटउडाई तेजनसहिसककोफिरिआवा मैअभिमानीरविनि
यरावा जिमिजिमिमैरविनिकटउडाऊं तिमितिमिमैंजुप्रितलहोइजाऊं जरेपंखबडविनेज
अपारा परेउंभूमिकरिघोरचिकारा मुनिइकनामचन्द्रमावोही लागिदयादेषिकरिमो
ही बहुप्रकारतिनज्ञानसिखावा देहजनितअभिमानछुडावा त्रेताब्रह्ममनुजतनुध

कि स
किं०
१२

बिहे तासु नारि निसिचरपति दुहिहि तासु खोज पठहै चकु दूता तिनहि मिलैनहोइ सिपता
जमिहिं पंवरकर तिजिनाचिन्ता तिनहि दिखाइ देव तुम सीता यहकहि मुनिआश्रम मिजगा
यो तेहि छनताह दयजानकपुभयो तब रामकर सुमिरसाकरहु निमिदिन मगजो बतमेर
हहुं मुनिकी गिरासत्य मइआजु सुनि मम बचन करहु इभु काजु गिरि त्रिकूट ऊपर बसि
लंका तहं रहरावन सहज असंका तहा असोकबाटिका अहैं सीयबैठ तहं सोचित रहही
३४ ॥ दो० ॥ मै देखहु तुम सहजनाहि गृहहि दृष्टि अपार बूढभयो नतु करते कछुक सहाइ तु
म्हार ॥ चौपई ॥ जो नांघै सतजोजन सागर करै सो रामकाज मतिआगर जो को इ करै रामक
रकाज तेहि सम धन्य नहीं आन काज मोहि बिलोकि धरहु मन धीरा रामकृपा कस भयेउ सरीरा
पापीउ जाकर नाम सुमिरहीं अतिअपार भव सागर तरहीं तासुदूत तुम तजकदराई राम
हृदय धरकरहु उपाई असकहि उमा गृद्ध जब गयउ तब के मन अति बिसमय भयेउ नि
जनिज बल सब काहु भाषा पार जान कहँ संसय राषा जरठ भयेउ अब कहै उ रिछेसा

नहिं तनु रहा प्रथम बल सीया। जब हि त्रिविक्रम भये खरारी। तब मैं तरुन रहा बल भारी॥ ४
दो:॥ बलि बांधत प्रभु बाढेउ सो तनु बरनि न जाइ। उभय घरी महँ दीन्ही सात प्रदच्छि
ना धाइ॥ चौपई॥ अङ्गद कहा जाउँ मैं पारा। जिय संशय कछु फिरती बारा॥ जामवन्त कह है तु
म सब लायक। किमि पठवौं सबहिं कर नायक॥ कहइ रिछपति सुनु हनुमाना। का चुप
साधि रहा बलवाना॥ पवनतनय बल पवन समाना। बुद्धि बिबेक बिज्ञान निधाना॥ कौन सो
काज कठिन जग माहीं। जो नहिं तात होइ तुम पाहीं॥ राम काज लगि तव अवतारा। सुनत कपि भ
ये पर्वताकारा॥ कनक बरन तन तेज बिराजा। मानहु अपर गिरिन कर राजा॥ सिंहनाद क
रि बारहिं बारा। लीलहिं लाघौं जलनिधि खारा॥ सहित सहाय रावनहि मारी। आनौं इहाँ त्रि
कूट उपारी॥ जामवन्त मैं पूछौं तोही। उचित सिखावन दीजे मोही॥ इतना करेहु तात तुम जा
ई। सीतहि देखि कहौ सुधि आई॥ तब निज भुज बल राजिव नयना। कौतुक लागि संग कपि
सेना॥ ३१॥ छं०॥ कपि सेन संग संहारि निसिचर राम सीतहि आनिहैं। त्रयलोक पावन

कि॰क
कि॰दा
१३

नयननरसुकिनारदादि बखानहैं जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावहीं
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावहीं॥छं॰॥ भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे
नर अरु नारि तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि॥दो॰॥ नीलोत्पल तनु
स्याम काम कोटि सोभा अधिक सुनिय तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ खग बधिक